Dainik Bhaskar, 5th November 2017, City Bhaskar

सालों पहले कुछ होनहारों ने विदेश न जाकर देश के लिए काम करना चुना, इसीलिए बने हम स्पेस साइंस के सिरमौर

IIT इंदौर की कॉन्वोकेशन में बोले इसरो चेयरमैन डॉ. ए.एस. किरण कुमार, कहा देश के बेहतरीन संस्थान से पढ़ाई की, अब अपना फर्ज निभाइए

टॉप करने की खुशी दोस्तों के साथ सेलिब्रेट करते बीटेक कम्प्यूटर साइंस 2013-17 बैच के केतन चवरे।

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

"1957 में रशिया ने स्पेस में सबसे पहला ऑब्जेक्ट लॉन्च किया था। इसके 6 साल बाद 21 नवंबर 1963 को डॉ. विक्रम साराभाई ने अमेरिका और अन्य देशों के सहयोग से भारत का पहला साउंडिंग सैटेलाइट लॉन्च कर दिया था। थूंबा से छोड़े गए इस रॉकेट के लिए डॉ. साराभाई ने लोकल प्रीस्ट की मदद से मछुआरों से गुहार लगाई कि वे लॉन्च व्हीकल के लिए जमीन दे दें। तब डॉ. साराभाई ने कहा था कि यदि आज आप हमारी मदद करेंगे तो कल यह तकनीक आपके लिए ही मददगार साबित होगी। अंतरिक्ष कार्यक्रम में भारत की एक और उपलब्धि रही है मंगलयान मिशन। धरती से छोड़े जाने के बाद 10 महीने में 6 करोड़ किलोमीटर की यात्रा पूरी कर मंगलयान मार्स के ऑर्बिट में शामिल हुआ। मंगलयान यदि अपने रास्ते से दो डिग्री भी इधर-उधर हट जाता तो पूरा मिशन फेल हो सकता था।

डॉ. ए.एस. किरण कुमार

1963 से लेकर आज तक भारत अपने पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल से 29 देशों के लिए 200 से ज्यादा सैटेलाइट लॉन्च कर चुका है। सैटेलाइट्स के सोसाइटल बेनिफिट एक्टिविटी में आज हम दुनिया में नंबर वन हैं। ये सारी सफलताएं देश को किसने दी हैं? आप जैसे ही स्टूडेंट्स ने, जिन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद विदेश जाने के बजाय देश में ही रहकर काम करने का निर्णय लिया। मैं ये सारी चीजें आपको क्यों बता रहा हूं? क्योंकि चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थितियां हों एक टीम के रूप में काम करके हम बड़े से बड़ा बदलाव ला सकते हैं। आप लोगों ने यदि देश के बेहतरीन संस्थान से पढ़ाई की है और यहां के संसाधनों का उपयोग किया है तो यह आपका फर्ज बनता है कि आप देश की बेहतरी के लिए काम करें। ये आपकी निजी सफलता से नहीं बल्कि टीम के रूप में काम कर देश को दिलवाई गई ग्लोरी के रूप में होना चाहिए।'

इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन चेयरमैन और डिपार्टमेंट ऑफ स्पेस के सेक्रेटरी डॉ. ए.एस. किरण कुमार ने शनिवार को आईआईटी इंदौर के पांचवें दीक्षांत समारोह में पासआउट स्टूडेंट्स को सम्बोधित किया। डॉ. कुमार और आईआईटी डायरेक्टर प्रो. प्रदीप माथुर ने बी.टेक के साथ एमएससी, एमटेक और पीएचडी स्कॉलर्स को सर्टिफिकेट और मेडल्स दिए।

टॉपर की कहानी भी एक मिसाल

जॉब ऑफर ठुकराकर अपने गांव के बच्चों को पढ़ा रहे, हाईस्कूल भी नहीं वहां

बी. टेक 2013-17 बैच के टॉपर केतन चवरे की कहानी भी एक मिसाल है। विदर्भ के छोटे से गांव कारंजा लाड के रहनेवाले केतन को आईआईटी में प्री प्लेसमेंट ऑफर मिला था, लेकिन उन्होंने आरामदायक जिंदगी चुनी। न ही उन्होंने कोई प्लेसमेंट इंटरव्यू दिया। केतन ने बताया मुझे बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है। इसलिए नौकरी न करते हुए वे अपने गांव में ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ा रहा हूं। केतन के पिता उदय चवरे ने बताया हमारा गांव आज भी पिछड़ा हुआ है। जेईई की कोचिंग तो दूर वहां अब तक हायर एजुकेशन की सुविधा भी नहीं है। मैंने भी बगैर इन सुविधाओं के खुद तैयारी कर पढ़ाई की और आईआईटी में एडमिशन लिया। गांव के बच्चों को पढ़ा रहा है ताकि वे भी आगे आ सकें।' कम्प्यूटर साइंस से बी.टेक कर चुके केतन छावरे को एकेडमिक एक्सीलेंस के लिए प्रेसीडेंशियल गोल्ड मेडल दिया गया। उन्होंने 9.89 सीजीपीए स्कोर किया।

फॉरेन फैकल्टीज को लाने का प्रयास

डायरेक्टर प्रोफेसर माथुर ने बताया 'पिछले साल हमने 22 फॉरेन फैकल्टीज की सर्विसेस ज्ञान प्रोग्राम के तहत ली थी। 2018 में 30 से ज्यादा फैकल्टीज आएंगी। परमानेंट फैकल्टी के रूप में फॉरेन एक्सपर्ट्स को लाने के प्रयास भी हम कर रहे हैं लेकिन इसके लिए हमें सरकार की इजाजत चाहिए। कोशिश जारी है।

सवाई माधोपुर से IIT इंदौर पढ़ने आए टीकाराम मीणा ने इस तरह मां गोकुलदेवी को अपनी सफलता का श्रेय दिया।